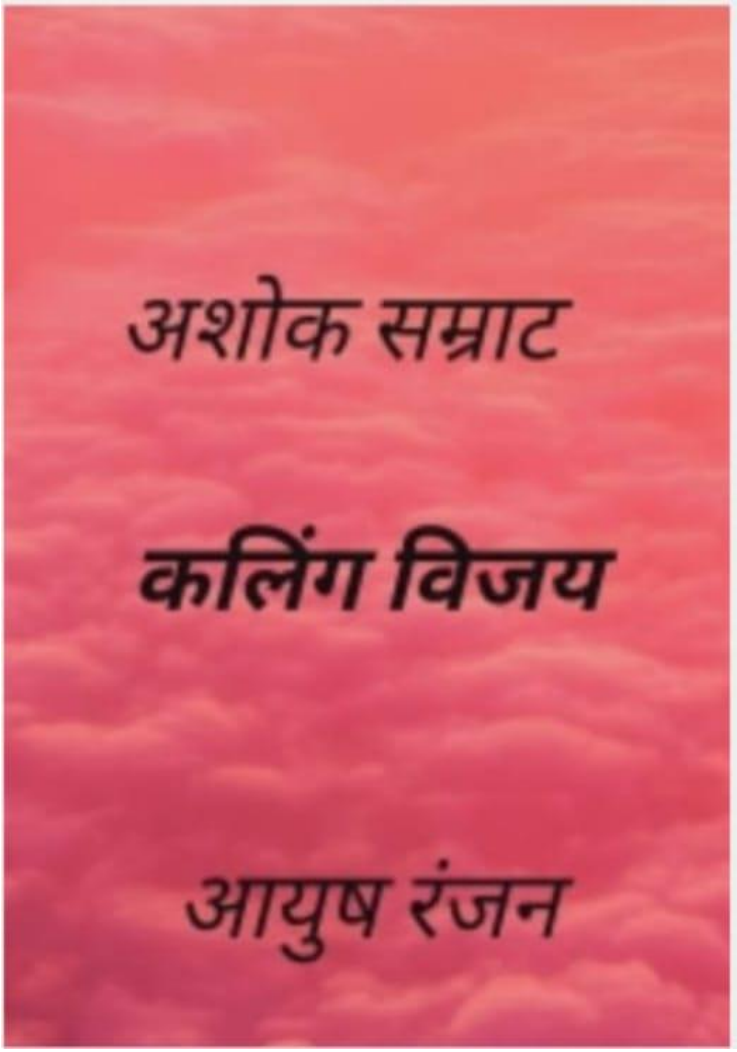
अशोक सम्राट
कलिंग विजय
आयुष रंजन

अशोक सम्राट

कलिंग विजय

आयुष रंजन

मूल्य- 170

(१७०)

पहली संस्करण-2020

प्रस्तावना

अपने पसंदीदा राजा एवं अपने पूर्वज अशोक सम्राट पर कविता लिखते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

अशोक चक्रवर्ती तो थे ही साथ ही साथ वो बहुत महान थे।उनके जैसा सम्राट कोई नही था उन्होंने न केवल अपनी गलतियों को माना और उसे सुधारा बल्कि उन्होंने इतने अच्छे काम किये की उन पर लगा हुआ कलंक भी मिट गया।

इस पुस्तक में कलिंग युद्ध का जिक्र किया गया है जो करीब 261ईसा पूर्व हुआ था जिसने सम्राट का हृदय परिवर्तित कर दिया था।यह तो हम सब जानते हैं कि कलिंग विजय के बाद उन्होंने अस्त्र शस्त्र त्याग दिया था परंतु इसके पीछे की कहानी नहीं जानते।इस पुस्तक में उसी छिपी

कहानी को कविता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आशा करता हूँ कि प्रस्तुत कविता आप सब को पसंद आएगी।

- लेखक (कवि)
- आयुष रंजन

बुद्धम् शरणम् गच्छामि,

संघमम् शरणम् गच्छामि,

धम्मम् शरणम् गच्छामि।

अशोक का हृदय परिवर्तन

कलिंग विजय की दूसरी रात,

महान थी वह रात।

अशोक का हृदय बदला,

दिया हिंदुस्तान का इतिहास बदल।

कलिंग के राजभवन में जश्न,

अशोक ने धारण किया सुंदर वसन।

कमर था सज्जित अच्छी तरह,

परंतु रणक्षेत्र में लोग रहे थे कराह।

नंदिनी थी रेखा की दासी,

और रेखा थी अशोक की प्रेयसी।

गायिका थी कलिंग राजकुमारी,

महान थी वह नारी।

गायिक ने दासी से पूछा-

क्या सम्राट बैठेंगे यहां,

और मैं गाऊँगी वहाँ।

हाँ, करना होगा तुम्हे वैसा,

कहेंगी रेखा जैसा।

कौन हैं यह रेखा?

रेखा है अशोक की प्रेमिका,

महामात्य राधगुप्त हैं जिनके पिता।

षड़यंत्रो की है रानी,

बनाना चाहती है महारानी।

क्या सम्राट बैठेंगे यहां,

और मैं गाऊँगी वहाँ।

हाँ, करना होगा तुम्हे ऐसा,

कहेगी रेखा जैसा।

हैं यह नियति कैसी,

संगीत में केवल सुर नहीं।

इसी से होगी तुम्हारी परीक्षा,

मिल सकती है तुम्हे कुछ भिक्षा।

मुझे भिक्षा चाहिए नहीं,

सम्राट से बात हो सकती नहीं।

नहीं!हैं वो अशोक सम्राट,

नहीं करते वो हर किसी से बात।

क्या हो तुम जानती गायिका?

आज देगा धनुष बधाई तीर को,

अर्थात कुमारी रेखा देगी,

बधाई सम्राट अशोक को

यह तुम हो क्या कह रही,

तुम्हारा दिमाग तो है सही।

मेरा दिमाग है सही,

पर न हो तुम यह जानती।

मैं तो मात्र यह जानती की,

राजा को सलाह देते प्रधानमंत्री,

और महामात्य जी है प्रधानमंत्री,

रेखा है महामात्य की पुत्री।

यह पाटलिपुत्र की

महलो की बात है।

तू डाल-डाल मैं

मैं पात-पात की बात हैं।

कब क्या हो जाए,

किसी को पता भी नहीं है।

यह पिशाचनी रेखा

साम्राज्ञी बनाने को तत्पर हैं।

सारे हत्याओ में

है इसका हाथ।

सम्राट भी है देते

अनजाने में साथ।

पिता महामात्य भी

है इस बात से अनजान।

और यह लड़की उछाल

रही है उनका सम्मान।

राज कुटुम्बों के हत्या

में भी है इसका हाथ।

अशोक के अपने ही भाई

को चढ़वा दिया काल।

शत्रु-सामंत उतार दिए

गए मौत के घाट।

एक भाई सुशीम

तक्षशिला में पड़े हैं।

दूसरा भाई वितशोक को

देश से निकाल दिया है।

यह सब क्या प्रधानमंत्री

के सलाह से हुआ है?

नहीं यह सब रेखा

की वजह से हुआ है।

सम्राट को बढ़ावा देने वाली

केवल एक शक्ति है।

वह रेखा के वचनों

की शक्ति है।

रेखा की शक्ति है,

वो नारी शक्ति हैं।

दासी!है कैसी यह शक्ति,

कैसे है यह नारी सशक्त।

यह शक्ति तो बहाती

है मानव रक्त।

गायिका,रेखा की आँखों

में अलग शक्ति है।

वह शक्ति साम्राज्ञी

बनने की है।

दासी ने अचानक कहा –

आ रहे है सम्राट यहां।

गायिका ,तुम आओ मेरे साथ,

न करना कोई उपहास।

तुम लायी हो न अपना वीणा,

हाँ ,नही गाती मैं उसके बिना।

जब मीले तुम्हे गाने का आदेश,

तो गाना अपने सुरीले गीत।

अशोक और रेखा का

होता है आगमन।

गायिका का बाई ओर प्रस्थान

नंदिनी का झुककर प्रस्थान।

रेखा!क्या तुम हो जानती,

क्या थे उसके शब्द अंतिम।

यह थे उसके शब्द अंतिम –

चंदाशोक,अपने शत्रुओं

के दास बनोगे एक दिन।

सम्राट!उस राजा की हिम्मत इतनी।

उसने दी आपको चुनौती।

क्या आपने क्या कुछ नही किया,

उसे यो ही जाने दिया।

मेरे पैरों तले लोट रहा

था उसका सिर अगले पल।

परंतु डरा दिया था

वह शब्द मुझे कल।

डरने की कोई बात नही,

सम्राट,अगर डर गए

तो स्वप्न नहीं।

मात्र आवाज करती है,

जब दीवार गिरती है।

पर अंत मे मिट्टी का

ढेर बचता है।

परंतु भयानक थे वो शब्द,

बहुत बड़े थे उस शब्द के मद्य।

उस शब्द ने दिया मुझे डरा,

लग रहा कि मैं हु मारा।

सम्राट!इधर उधर

की बाते छोड़िये।

निश्चिन्त होकर आनन्द,

हर्ष में यह जश्न मनाइए।

गायिका!गाना आरम्भ करो।

कोई मधुर संगीत सुनाओ।

गीत होती हैं आरम्भ,

अशोक सुनना करते है प्रारंभ।

गीत अमल,तरल,मधुर,

चपल,प्यार का सुराग री।

सजल पवन परस विटप,

मर्मर ध्वनि जाग री।

सुना मेरी वंसी वह तान।

करुण उस गाथा के सोपान।

सुना वंशी वह तान,

जिसे सुनना चाहते अशोक सम्राट।

वसंती वैभव का विस्तार,

सुना कैसे सागर के पार।

सरस फूलों का सुंदर देश,

भ्रमर जिनका नृप अतुल उदार।

सुरभि सुमनो की उसकी प्राण,

सुना मेरी वंशी वह तान।

सुना वंशी वह तान,

जिसे सुनना चाहते अशोक सम्राट।

भ्रमर का सुनकर मधुर निनाद,

खोजती पहुँची उस उद्यान।

सुना मेरी वंशी वह तान,

जिसे सुनना चाहते अशोक सम्राट।

भ्रमर का देखा उसने रूप,

कहा!प्रिय चलो हमारे साथ।

करो नव सुमनों का रस पान,

सुना मेरी वंशी वह तान।

अचानक कुमारी रेखा बोली।

है नही यह गीत सही।

नही रेखा,यह गीत है बिल्कुल सही,

आखिर गायिका के मन में क्या चल रही।

अरे,क्या था यह कोई अभिशाप,

अरे क्या मायाविनी का जाल।

की जो आकांक्षा का बन दास,

शांति सुंदरता का बना काल।

भ्रमर ने ली विश्व विजय ठान,

सुना वंशी की तान।

सुना वंशी वह तान,

जिसे सुनना चाहते आशिक सम्राट।

रेखा,इस गीत में है करुण रस,

मैं जा रहा इसके वश।

रुकिए,मैं अभी करवाती इसे बंद।

रुको!नही!मैं लेना चाहता हूँ इसका आनंद।

सम्राट!नहीं हैं इसमे आनंद,

जरूर हैं यह आपके खिलाफ कोई षडयंत्र।

षडयंत्रो को मैं नही सह सकती,

अभी हु इसे बंद करवाती।

क्यों दिला रही हो मुझे क्रोध,

कितना हैं इस संगीत में प्रमोद।

यह तुम क्यों नही जानती,

क्यों तुम इसे बंद करवाना चाहती।

ध्वंस करता फूलो के पंख,

छेदता कलियों के लघु गात।

मसल किंशक पिट पराग,

करोड़ो जीवो पर आघात।

रुधिर से लाल चला नादान,

सुना वंशी की तान।

सुना वंशी वह तान,

जिसे सुनना चाहते अशोक सम्राट।

कहाँ वह मधुरमय राग?

कहाँ वह यौवन वारी-विलास?

सुना वंशी वह तान ,

जिसे सुनना चाहते आशोक सम्राट।

कहाँ उषा रंजीत मधुहास?

बस एक अभिलाषा की प्यास?

सुना वंशी वह तान ,

जिसे सुनना चाहते अशोक सम्राट।

बने हो पुष्पराज पाषाण!

क्यों हो तुम राजा महान,

किसने कहा तुम्हे सम्राट महान,

तुम तो हो पुष्पराज पाषाण।

गायिका जरा अंदर तो आओ,

अपना परिचय तो दो।

क्या हो कलिंग

की विश्वस्त अधिकारिणी।

कही तुम तो नही हो

कोई षड्यंत्रकारिणी,

कौन हो तुम जल्दी बताओ,

जल्दी से अपना परिचय दो।

मैं तो हूँ एक भिक्षुणी,

कहे का मैं अधिकारिणी।

नही हूँ कोई षड्यंत्रकारिणी मैं,

एक तुच्छ गायिका हूँ मैं।

अर्थात वो पाषाण राजा मैं हूँ,

वो निर्दयी भ्रमर मैं हूँ।

कहानी है मेरी गीत,

पर कठोर है आपकी जीत।

क्या!कठोर सत्य है,

मेरी कलिंग विजयी।

यह तुम क्या कह रही,

कठोर है कलिंग विजयी।

यह देखती नहीं है कटार,

मैं हु सकता तुम्हे मार।

कर सकता हूँ तेरा संहार।

हाँ, सम्राट कर दे मेरा संहार।

जहाँ बहाया इतना रक्त

वहाँ बहा दो एक बूंद और रक्त।

है प्रस्तुत मेरी गर्दन,

कर दो इसे धर से अलग।

क्या तुम हो जानती,

गायिका!किससे कर रही हो बातें।

हाँ रेखा ! यह पाटलिपुत्र का हैं नरपति,

जिसने किया कल कलिंग की दुर्गति।

कुमारी, रण क्षेत्र में लोग

अधमड़े पड़े हैं।

बेचारे घाव से

तड़प रहे हैं।

गायिका!क्या हो तुम पागल?

नहीं ,कुमारी!हु नहीं मैं पागल।

छत पर चलिये कुछ हु दिखाती,

जो आप लोग नहीं जानते वो हूँ बताती।

लो,आ गए हम छत पर,

क्या दिखाओगी हमे यहां पर।

जरा बाएं ओर नजर घुमाइए,

और अपने मन के नेत्रों से देखिए।

गायिका!वो है क्षेत्र रणो का,

जहाँ ढेर हैं शवों का।

यहाँ आ रही है लाशों से दुर्गंध,

है नहीं यहाँ कोई आनंद।

वही हूँ कहना चाहती सम्राट,

नहीं है यहां कोई आनंद।

लाश के ढ़ेर में कोई मानता जश्न?

खून की प्यासी है आपकी कृपाण।

मेरी कृपाण है

खून की प्यासी।

हाँ सम्राट, वह

नरहत्या की प्यासी है।

वो देखो तांडव,

मृत्यु का महा तांडव,

तांडव का भी तांडव,

महादेव के तांडव

से भी बड़ा तांडव।

सम्राट!क्या आपका है हृदय?

उसमे है एक रक्त।

उन शवो में भी है हृदय,

उसमे भी है वही रक्त।

धूल में सने पड़े

हैं सहस्रो हृदय।

सच बताइए ! क्या

यही है आपकी विजयी।

मेरी विजयी !

हाँ, आपकी विजयी?

वीरान हुई कलिंग राजधानी,

मनुष्यता को हुई भारी हानि।

पहले थी यह घना वन,

जो अब बन गई अब क्षेत्र रण।

सच बताइए !क्या

यही है आपकी विजयी।

मेरी विजयी!

हाँ,आपकी विजयी?

एक लाख से ऊपर

शव पड़े है रणक्षेत्र में।

सहस्रो सड़ रहे

हैं आपकी बंदीगृह में।

कलिंग में हैं हजारो बच्चे,

जिन्हें आ रही पिता की यादें।

हजारों सुहाग

चले गए है।

हजारो आत्माएं

झुलस गए हैं।

है यह बौद्धों

की दुर्बल नीति।

मत मारो तुम

सम्राट की मति।

देना परामर्श सम्राट को

है नहीं तुम्हारा काम।

जानती हूँ कुमारी,

है नही यह मेरा काम।

नही गायिका! कहे जाओ

अपनी सचपूर्ण बातें।

खुल रही है इस

अंधे सम्राट की आँखे।

यह क्या आप कह रहे साम्राट,

जा रहे हैं तुच्छ भिखारिणी के बातें।

नही रेखा,इसकी बातो में है सत्यता,

यह मेरा कलंक है मिटा सकता।

सम्राट,आपकी जीत

में हैं आपकी हार।

आपने किया है

मात्र इस धरा पर वार।

न जीत सके आप

पवित्र कलिंग की आत्मा।

आने वाली पीढ़ी सहेगी

मात्र आपकी क्रूर यातना।

गायिका,काम है ऋषियों

का जितना दिल।

और,सम्राट अशोक

के पास है भुजबल।

कुमारी!सम्राट ने किया

किस भुजबल का इस्तेमाल।

उल्टा,सहस्रों सैनिक चढ़

गए भेंट उस काल।

सम्राट,पाटलिपुत्र से आए

थे हजारो सैनिक लिए।

आप दोनों सैनिकों से पूछिए,

क्या थे वे तैयार इस युद्ध के लिए।

गायिका!सैनिको का काम

नहीं है चाहना और सोचना।

उनका कार्य है राजा की आज्ञा की मानना।,

और न चाहते हुए भी मरना और मारना।

एक बात और कुमारी!

शत्रु का भी है गाँव प्यार सा,

मधुर स्री हैं स्वप्न सी,

नन्हा बच्चा है कोमल सा।

आपके सैनिको के

हृदय में भी है प्यार।

धनुष खीचते समय क्या

नही उमड़ेगा वह प्यार।

शत्रुओं को मारते समय

क्या नहीं काँपते उनके हाथ।

अगर चाहते तो वह भी न,

देते आपका इस जंग में साथ।

परंतु गायिका!नहीं

काँपते मेरे हाथ।

क्यो नहीं होता

यह मेरे साथ।

इतनी दुर्बलता ठीक नही,

सम्राट,देती आपको शोभा नहीं।

कुमारी,क्या सम्राटो का हृदय नहीं?

गायिका,मनुष्यता के मायने कायरता नहीं।

रेखा!हूँ मैं सम्राट, तो

क्या नहीं दुखेगा मेरा दिल।

क्या नही सकता

है मेरा मुख खिल।

अवश्य खिलेगा मुख सम्राट,

जो खोया है वो मिलेगा सम्राट।

हिमालय भी तो है पाषाण का बना,

फिर भी निकलता है मीठे पानी की झरना।

सम्राट को परामर्श देने

आई हो किस अधिकार से।

कुमारी!मैं तो यहाँ आई हूँ

मनुष्यता के अधिकार से।

सम्राट!मनुष्य हुआ नहीं है पैदा

दूसरों को मारने के लिए।

बल्कि होता है वह पैदा,

दूसरों के जीने के लिए।

नहीं गायिका!जो अपने

लिए जीते हैं,

वो बेशक दूसरों की

सहायता भी कर सकते हैं।

नहीं कुमारी,जो अपने

लिए जीते हैं,

वो दूसरों के लिए नहीं जीते हैं,

वो तो मात्र दया के पात्र हैं।

क्या हूँ मैं पात्र दया का?

हाँ, सम्राट,हो आप

पात्र दया के।

भिखारी से भी ज्यादा दया के।

बस गायिका,होती है

सीमा मूर्खता की।

क्या कह रही हो,

सम्राट हैं पात्र दया की।

बस करो रेखा!गायिका

नहीं करता कोई मुझसे प्यार,

क्या यह सम्राट अशोक

गया हैं जिंदगी का जंग हार?

हाँ सम्राट,नहीं करता

कोई आपसे प्यार।

नहीं हो आप

कोई पालनहार।

हूँ...हूँ...हूँ...कैसी है

विचित्र यह बात।

आपको कोई करता

नहीं प्यार सम्राट।

क्या कोरोड़ो प्रजा

है गई मर।

नहीं,कुमारी,प्रजा

गई है सम्राट से डर।

क्या,प्रजा है मुझसे डरती?

हाँ, सम्राट,वो है डरती।

और उनके विश्वस्त

दरबारी, सेनापति और मंत्री।

कुमारी,जो केवल जानते हो

आज्ञा मनना और सलाह देना।

वो क्या जानेंगे

सम्राट से प्यार करना।

और मैं...,मैं...मैं...

क्या मैं भी नहीं करती प्यार?

प्यार और तुम!नही कुमारी,

तुम भी नही करती प्यार।

रेखा!रेखा!...मैं तो

कैरता तुमसे प्यार?

तुम भी तो करती थी

मुझसे प्यार?

हाँ, हाँ, मैं हूँ

करती आपसे प्यार।

नहीं,सम्राट नहीं करती

कुमारी रेखा आपसे प्यार।

है यह मेरी

निधि एकमात्र।

कुमारी रेखा है

मेरी मित्र खास।

सम्राट,आप माँग रहे हैं भिक्षा,

दे रही है यह आपको व्यर्थ शिक्षा।

नहीं रेखा,दे रही है यह सही शिक्षा।

गायिका!दे दो अपना ज्ञान मुझे भिक्षा।

कुमारी,क्रोध करना व्यर्थ है!

तुम्हारे बारे में हम सब जानते हैं।

गायिका!क्या हो तुम जानती,

क्यों नहीं तुम मुझे बताती।

जो बोलूँगी वह

कठोर सत्य हो सकता है।

यह सुनकर शायद आपको,

जोरदार धक्का लग सकता है।

सुनिए सम्राट!मैं हूँ बताती,

महामात्य राधगुप्त हैं आपके प्रधानमंत्री।

राजा को सलाह देते हैं प्रधानमंत्री।

यह रेखा है राधागुप्त जी की पुत्री।

कब क्या हो जाता

किसी को पता भी नहीं है।

यह पिशाचनी रेखा,

साम्राज्ञी बनाने को तत्पर है।

पिता महामात्य जी

भी इस बात से अनजान।

और यह लड़की उछाल

रही है उनका सम्मान।

राज-कुटुम्बों के हत्या

में भी है इसका साथ।

आपके अपने ही भाई

को चढ़वा दिया काल।

सारे हत्याओं में

इसका है हाथ।

सम्राट आप भी देते

अनजाने में साथ।

सम्राट!सुन रहे है इसका प्रलाप?

भिक्षुणी!यह क्या किया तुमने?

इससे अच्छा तो तुम मुझे

देती झूठे स्वप्नों में रहने।

हो गया मैं दयनीय,

भारत-वर्ष का सम्राट

हो गया है दयनीय।

सम्राट!आज टूट गए आपके बंधन।

हाँ गायिका!,प्रेम का बंधन।

नहीं सम्राट,घृणा का बंधन।

टूटा है लालसा का बंधन।

परंतु है मेरी लालसा अमर।

सम्राट,रहने दीजिए उसे अमर।

अगर रहेगी लालसा अमर,

तो रहेगी आपका प्रेम अमर ।

इसकी माँगता भीख आपसे संसार।

खंडहर बन चुके है आपके स्वप्न,

उसमें देखती मैं नया स्वप्न।

एक नए जीवन का स्वप्न।

नई उल्लास और दुनिया का स्वप्न।

परंतु उजड़ गई मेरी दुनियाँ।

सम्राट!यह थी स्वार्थपूर्ण दुनियाँ।

किन्तु अभी है एक दुनियाँ,

हँसते हुए लोगो की दुनियाँ।

परंतु,इस जगती तल

पर घूम रहा है एक पिशाच।

गायिका!कैसा पिशाच?

नरहत्या का,युद्ध का पिशाच।

सम्राट!आप नई

दुनिया बसाईए।

उजड़ी कलिंग राजधानी

को फिर बसाईए।

इन रक्त नदियों के पीछे देखिए।

इन शवों से ऊपर देखिए।

इन हाहाकारों से परे देखिए।

एक नए सृष्टि को देखिए।

परंतु,मेरी लालसा,

वो अतृप्त आकांक्षा।

मैं नहीं देख सकता

मैं अब क्या कर सकता।

आपकी लालसा और अरमान,

आपकी शक्ति और प्यार,

करेंगे नव सृष्टि का निर्माण,

और अमर रहेगी आपकी निर्माण।

सम्राट!,एक उज्ज्वल प्रभात,

भगवान बुद्ध की करुणा

किरणों से आलोकित प्रभात।

धर्म से प्रकाशित प्रभात।

भारत भूमि के कोने-कोने में

पावन संदेश का प्रचार।

आर्यावर्त के हर एक नगर में

शिला-लेख और स्तंभो की भरमार।

मैं देख रही हूँ सदियों के बाद,

संसार के हृदय मंदिर में,

अशोक सम्राट की प्रतिमा,

एक धर्म के पुजारी की प्रतिमा।

हूँ रहा मैं भी देख,

धूल रही मेरी आत्मा,

धूल रहा कलंक मेरा।

है प्रभात उज्ज्वल कैसा।

तुमने मुझे नया मार्ग दिखाया।

इस पावन धर्म के बारे में बताया।

कैसे चुकाऊँ आपका अहसान,

कृपया,अपनी बताओ पहचान?

बस कर दो मेरा एक काम,

ला दो मेरा मृत भाई।

हाँ, ला दो मेरा भाई,

फिर बताऊँगी अपना नाम।

बहन!अपना दो सही पहचान!

क्यों मरेंगे तुम्हारे भाई को हम।

मैं हूँ राजकुमारी कलिंग का।

अर्थात मैं हूँ हत्यारा तुम्हारे भाई का।

राजकुमारी,कर दो मुझे माँफ,

आपने कर दिया मेरे मन साफ।

नहीं सम्राट!आप हैं मेरे भाई,

अशोक सम्राट,मेरे प्यारे भाई।

राजकुमारी,मेरी बहन,मेरी बहन।

पाटलिपुत्र चलिए!जो बोलोगी

वह करूँगा!देता हूँ मैं वचन।

सम्राट!त्याग दीजिये आप कृपाण।

तो सम्राट,जोर से कहो

प्रेम से कहो,

विश्वास के साथ कहो,

गाकर कहो –

बुध्दम् शरणम् गच्छामि,

संघम् शरणम् गच्छामि,

धम्मम् शरणम् गच्छामि।

- आयुष रंजन

आगे जारी है...

सधन्यवाद

मैं अपने प्रधानाचार्य फादर रेजी सी वर्गीस को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हमेसा मेरी सहायता की एवं मेरा मनोबल बढ़ाया है।वो एक महान व्यक्ति तो है ही साथ ही साथ उनका सोचने का तरीका भी सामान्य मनुष्य से हटके है।वो एक ऐसे मनुष्य जो नकारत्मकता में भी सकर्मकता खोज लेते है।

साथ ही साथ मैं जगदीश चंद्र माथुर को धन्यवाद देता हूँ क्योंकि उनका लिखा हुआ नाटक “कलिंग विजय” पढ़कर ही मुझे यह कविता लिख़ने का विचार आया।

मैं प्रकाशक पोथी.कॉम को भी यह पुस्तक छापने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

सधन्यवाद

- लेखक(कवि)

- आयुष रंजन